सारांश

लघु शोध प्रबंध के सारांश स्वरूप शोध विषय **"उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा संबंधी गांधी के विचार की प्रासंगिकता"** शीर्षक पर यह शोध कार्य हुआ है, जिसमें गांधी जी की उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के विषय में विस्तार से व्याख्यायित किया गया है। गांधी जी ने उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा को किस आधार पर विश्वविद्यालय की नीतियों में समाहित किया जाय, जिसमें बुनियादी शिक्षा , उच्च शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा में भारतीय संस्कृति जैसे विषय भी जुड़े होने चाहिए। प्राथमिक ,उच्च और प्रौढ़ तीनों का भारतीयकरण करके ही विद्यार्थियों को शिक्षित करना चाहिए। क्योंकि तत्कालीन समय में भारत पूर्ण रूप से ब्रिटिश सरकार की गुलाम रहा और यहाँ की शासन व्यवस्था तथा शिक्षा नीति पूर्ण रूप से पश्चिमी आधारों पर बनी हुई थी। जिसके कारण भारत के लोगों को मानसिक रूप से ब्रिटिश शिक्षा देकर समाज तथा राष्ट्र में असमानता का बीजारोपण कर दिया और कुलीन वर्ग शिक्षित होने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश या भारत के बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेते तथा सर्वहारा वर्ग ऐसी शिक्षा से वंचित रहा जाते।

गांधी जी के सम्पूर्ण शिक्षा दर्शन को पढ़ने के बाद पता चला कि वे शिक्षा लेने वालों को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। गांधी जी ने शिक्षा के तीनों प्रारूप वो चाहे प्राथमिक शिक्षा हो उच्च शिक्षा हो या फिर प्रौढ़ शिक्षा हो सभी को स्वावलंबी बनाना चाहते थे। क्योंकि गांधी जी नहीं चाहते थे कि देश में रहने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा मरे या फिर बेरोजगार रहे। गांधी जी ने शिक्षा में किसी प्रकार का विभाजन न कराते हुये सभी को एक जैसी शिक्षा मिल सके , ऐसे विचार दिये थे तथा शिक्षा पूर्ण रूप से भारतीय मानकों के आधार पर हो जिसमें नैतिकता , मानवता , देश प्रेम , विश्व बंधुत्व की भावना एवं भारतीय संस्कार जीवित रहे। ऐसी शिक्षा से भारत के लोगों में एक चेतना का विकास होगा और समाज में नया पुनर्जागरण का उद्भव होगा। शिक्षा नीति में उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा का विचार , जो अत्यंत महत्वपूर्ण

रहा जिसमें उन्होंने कहा कि समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो शिक्षा ग्रहण करने में पीछे रह गए हैं , अतः ऐसे वर्गों के लोगों के लिए प्रौढ़ शिक्षा का विधान समाज के लिए हितकर एवं राष्ट्र के विकास के लिए उत्तरदायी सिद्ध होगा।

अतः इस लाघु शोध में गांधी जी के शिक्षा का गहन अध्ययन करते हुये मैंने उनके उच्च शिक्षा और प्रौढ़ के तारतम्य को जोड़ते हुये विवरणात्मक आधार पर नए रूप से शोध करने का मात्र प्रयास किया गया है।

Abstract

Short summary format of the dissertation thesis theme "higher education and adult education relevance of Gandhi's thought" this research work, in which higher education and adult education of Gandhi-ji have been described in detail. Gandhi-ji has given his views that how higher education and adult education based on University policies and according to him basic education, higher education and adult education in Indian culture as subject should be associated with it. Students should be educated by doing indianization of elementary, higher and adult education . Because at the prevailing time, British Government in India is completely subservient and governance and education policy was entirely on Western bases. That is why the people of India were mentally provided with the British education just to rope the seeds of inequality in society and elite class started taking admissions in the renowned universities of country or abroad for the higher education and as a result proletarian class left deprived of higher education.

After reading the comprehensive education philosophy of Gandhi ji, it showed that he wanted to make the education self-reliant. Whatever will be the education formats, whether primary education higher education or adult education Gandhi ji had the aim to make it self-reliant for everybody. Because it was a desire of Gandhi ji that no one in the country should die because of hunger or remains unemployed. Gandhi-ji expressed the thought of same education so that everyone

get it equally and education must be fully based on Indian standards including ethics, humanity, love, in which sense of world brotherhood and Indian rituals should be alive. Such education will develop a consciousness in the people of India and the emergence of a new Renaissance in the society will took place. He had given the idea of adult education in education policy, which is extremely important in the society in which he said there are a lot of people who have been left behind in taking education, legislation of adult education for such classes will be prudent for the society and it will be liable to develop the nation.

Therefore, in this research work an effort has been made to do the detailed study of Gandhian thought about the higher and adult education by linking its harmony.